International Journal of Applied Research 2020; 6(11): 217-219

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 8.4
IJAR 2020; 6(11): 217-219
www.allresearchjournal.com
Received: 11-09-2020
Accepted: 14-10-2020

डॉ० किशोर कुमार
C/o महेन्द्र पोद्दार, मोगलपुरा, लालबाग, दरभंगा, बिहार, भारत

Corresponding Author:
डॉ० किशोर कुमार
C/o महेन्द्र पोद्दार, मोगलपुरा, लालबाग, दरभंगा, बिहार, भारत

वैश्वीकरण का प्रभाव दरभंगा जिला के विशेष संदर्भ में

डॉ० किशोर कुमार

सारांश
वैश्वीकरण का वर्तमान अभिप्राय विश्व की विभिन्न अर्थव्यवस्थाओं को एक–दूसरे के साथ जोड़ने से है। इस व्यवस्था के अन्तर्गत विश्व के सभी अर्थव्यवस्थाएँ एक अर्थव्यवस्था का रूप ले लेती है तथा उत्पादन के साधनों एवं उत्पादित वस्तुओं और सेवाओं के मुक्त प्रवाह पर कोई प्रतिबंध नहीं रहता है। वैश्वीकरण के वर्तमान दौर में पूँजी का अंधाधुंध केन्द्रीकरण हो रहा है। यांत्रिक स्वतंत्रता एवं मुक्त व्यापार वैश्वीकरण की एक प्रमुख विशेषता हैं। एक उपभोक्ता के रूप में आज हमारे समाने वस्तुओं और सेवाओं को खरीदने के अनेक विकल्प है। विश्व के चोटी के विनिमिताओं द्वारा निर्मित टेलीविजन के नवीनतम मॉडल, लैपटॉप, डिजिडल कैमरे और मोबाईल फोन क्रेताओं को सुगमता से उपलब्ध है, कुछ समय पूर्व तक भारत की सड़कों पर केवल फिएट और एम्बेसेडर मोटर गाड़ियाँ ही दिखाई देती थी, लेकिन अब भारतीय विश्व की लगभग सभी प्रमुख कंपनियाँ द्वारा निर्मित मोटर गाड़ियाँ खरीद रहे है। उसी प्रकार कमीज, टी–शर्ट, जीन्स और जूतों से लेकर विदेशी खिलौने तक दरभंगा के बाजारों में देखे जा सकते हैं।

प्रस्तावना
दरभंगा के बाजारों में दो दशक पूर्व तक वस्तुओं की ऐसी विविधता नहीं थी, लेकिन पिछले कुछ वर्षों में ही हमारे बाजार का स्वरूप पूर्णतः परिवर्तित हो गया हैं। वैश्वीकरण के युग में अर्थव्यवस्था ह्रास की समस्या तक एक वैश्वीक समस्या के रूप के रूप में उभरी है। हरित गृह गैसों के उर्त्सजन से धरती का तापमान बढ़ रहा है, जिसे हम वैश्विक तापमान नाम से जानते हैं। इसके लिए औद्योगिक राष्ट्र ही मुख्य रूप से जिम्मेवार हैं। किन्तु भूमंडलीयकरण ने विश्व समाज को एकीकृत करने की अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई हैं। वैश्वीकरण ने ज्ञान एवं विचारों के आदान–प्रदान को सहज एवं संभव बनाया है। वैश्वीकरण के दौर में पर्यावरण और मनुष्य के रिश्तों में बिखराब आया है जबकि मानव जीवन और पर्यावरण में अटूट संबंध है। स्वच्छ व संतुलित पर्यावरण मानव को प्रकृति की अफनम भेंट है जो कि जीवन व शक्तिदायिनी है। प्रकृति के खजाने में मनुष्य के लिए अनेक संसाधन छिपे हुए हैं। प्रकृति मनुष्य को आज्ञा देती है कि वह अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए इन प्राकृतिक संसाधनों की भरपाई कर देती है। लेकिन जब मनुष्य स्वार्थ व लालचवश इन प्रकृति के विभिन्न घटकों का संतुलन बिगाड़ देता है और जिससे संपूर्ण पर्यावरणतंत्र अस्थिर हो जाता है।
दरभंगा की अर्थव्यवस्था पूरी तरह कृषि और कृषि तंत्र पर निर्भर है। वर्तमान वैश्वीकरण की आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक नीतियों के कारण सम्पूर्ण विश्व में भयावह विषमता व बेकारी की स्थिति पैदा हुई है। एक तरफ मुट्ठी भर आबादी के पास दुनियाँ के उपलब्ध संसाधनों का अधिकांश हिस्सा है। वहीं दूसरी तरफ दुनिया की अधिकांश आबादी को राजी–रोटी, शिक्षा स्वास्थ्य जैसी बुनियादी सुविधाएँ भी प्राप्त नहीं है। उपलब्ध आँकड़ें भी बता रहे हैं कि दुनिया की लगभग 125 करोड़ आबादी को दोनों जून का भोजन भी नसीब नहीं हो रहा है। पूँजी के अत्यधिक केन्द्रीकरण के कारण बहुसंख्यक आबादी के समक्ष आर्थिक असुरक्षा का भयानक खतरा उत्पन्न हो गया है। डॉ. प्रेम सिंह के अनुसार ''विकसित देशों का अगुआ संयुक्त राज्य अमेरिका है, और उसकी सरपरस्ती में चलने वाले विश्व बैंक व अंतरर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष जैसे वैश्विक आर्थिक संस्थाओं और बहुराष्ट्रीय कम्पनियों, जिन्हें अब पारराष्ट्रीय कम्पनियाँ भी कहा जाता है, के द्वारा वैश्वीकरण की मुहिम को अन्जाम देता है।
वैश्वीकरण की धारणा कोई नई धारणा नहीं है। प्राचीन एवं मध्यकाल में भी विश्व के अनेक देश व्यापार के माध्यम से परस्पर जुड़े हुए थे और उनके बीच वस्तुओं, विचारों एवं कौशल का आदान–प्रदान होता था। परन्तु उस काल में परिवहन तथा संचार के साधन अधिक विकसित नहीं थे। इसके फलस्वरूप विश्व व्यापार कुछ विशेष देशों और वस्तुओं तक ही सीमित था। दरभंगा जिला में विदेशी पर्यटकों को देखने के लिए इतिहास, सभ्यता, धर्म और सांस्कृतिक का विविधतापूर्ण भण्डार है। कानून–व्यवस्था तथा संरचनात्मक सुविधाओं की स्थिति में सुधार होने से जिला में पर्यटन का

एक प्रमुख उद्योग के रूप में उभरने की संभावना है।

भूमण्डलीकरण व्यापार के अन्तर्राष्ट्रीयकरण से सम्बन्धित है, जिसमें वैश्विक प्रतिस्पर्धा विकसित करने के लिये व्यापार और व्यापारिक नीतियों के प्रति वैश्विक दृष्टिकोण अपना जाता है, अर्थात् प्राथमिक रूप में व्यापार ही इसका उद्देश्य है। इसी के आधार पर आर्थिक विकास प्रक्रिया, सामाजिक सांस्कृतिक विचारधारा का वैश्वीकरण भी इसका एक पक्ष है। भूमण्डलीकरण के अन्तर्गत केवल व्यापार का अन्तर्राष्ट्रीकरण ही नहीं बल्कि विभिन्न देशों के बीच सामाजिक–आर्थिक विचारधाराओं का स्वतः प्रवाह भी सम्मिलित है। इसलिये वर्तमान समय में पूरे विश्व को एक 'वैष्विक ग्राम' के रूप में माना जाता है। आर्थिक दृष्टिकोण से भूमण्डलीकरण वैश्विक बाजार में व्यापारिक प्रतिस्पर्धा को जन्म देता है।

वर्तमान समय में भूमण्डलीकरण की प्रक्रिया को गतिशीलता प्रदान करने में तकनीक और सूचना क्रांति की महत्वपूर्ण भूमिका है। विकसित देश अपनी प्रगति के संदेशों को सूचना माध्यम से प्रचार भी करा रहे है जिसके कारण विकासशील देश उनके मोहपाश में उलझते जा रही है। सभी विकासशील देशों की परिस्थितियाँ समान नहीं है। भारत अपनी लम्बी विरासत, कृषि आधारित अर्थतंत्र, विशाल जनसंख्या, गरीबी, अशिक्षा और बीमारी की भयंकर दशा के बावजूद इसकी ओर बढ़ता जा रहा है, उसके परिणाम पर ध्यान देना जरूरी है। भारतीय समाज भूमण्डलीकरण के चकाचौंध से घिरता जा रहा है। भारतीय समाज उपभोक्तावाद के क्षणिक सुख को त्यागने में अपनी लम्बी विरासत को नकराने लगा है। नव शिक्षित समाज परिवर्तन के नाम पर एक ऐसे मार्ग पर बढ़ रहा है जो भारतीय परिवेश के अनुकूल नहीं है। स्वास्थ्य सम्बन्धी बढ़ती कठिनाइयों के बावजूद जीवनशैली अन्धानुकरण की ओर बढ़ने लगी है। बोतल बन्द पानी, डिब्बाबन्द खाद्य पदार्थ, सौन्दर्य प्रसाधनों का अधिकाधिक प्रयोग, परिश्रम से बढ़ता परहेज आदि ऐसे ही पक्ष है जिनका सीधा सम्बन्ध वैश्वीकरण से है। वैश्वीकरण का अर्थ किसी देश की अर्थव्यवस्था का एकीकरण से लगाया जाता है। यह एकीकरण आर्थिक नीतियों के स्तर पर सूचना संचार के स्तर पर तथा उत्पादन तकनीकी के प्रयोग व हस्तांतरण के स्तर पर होता है।

आज संचार क्रांति ने विभिन्न देशों के बीच दूरी कम कर दी है, जिसके फलस्वरूप प्रत्येक व्यक्ति अपने को समस्त विश्व से जुड़ा हुआ महसूस कर रहा है। वैश्वीकरण का शाब्दिक अर्थ स्थानीय/क्षेत्रीय वस्तुओं या घटनाओं के विश्व स्तर पर रूपांतरण की प्रक्रिया का वर्णन करने के लिए भी प्रयुक्त किया जा सकता है, जिसके द्वारा पूरे विश्व के लोग मिलकर एक समाज बनाते है तथा एक साथ कार्य करते है। यह प्रक्रिया आर्थिक तकनीकी, सामाजिक और राजनीतिक तातों का एक संयोजन है।

वैश्वीकरण शब्द का उपयोग अक्सर आर्थिक वैश्वीकरण के सन्दर्भ में किया जाता है। अर्थात व्यापार, विदेशी प्रत्यक्ष विदेशी निवेश, प्रत्यक्ष निवेश, पूंजी प्रवाह, और प्रौद्योगिकी प्रसार का माध्यम से राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था का अंतरराष्ट्रीय अर्थव्यवस्थाओं में एकीकरण है। वैश्वीकरण के सम्बन्ध में एन्थोनी गिडेन्स का कहना है कि आधुनिकता का बहुत बड़ा परिणाम वैश्वीकरण है। यह इसलिए कि वैश्वीकरण में समय और स्थान को समाजिक जीवन में नये सिरे से परिभाषित किया गया है। हार्वे ने इस संबंध में कहा है कि वैश्वीकरण समय और स्थान की गति एवं गहनता से जुड़ा हुआ है। अमित भादुड़ी एवं दीपक नैयर ने अपनी फस्तक में वैश्वीकरण बहुलवादी विवेचन किया। थियोडोर लेविट ने लिखा है कि हमें भूमंडली तरीके से सोचना चाहिए और हमारे काम करने के तरीके स्थानीय देशी होने चाहिए। सन् 1998 में स्टॉकहोम सम्मेलन में विचार–विमर्श को अन्तर्राष्ट्रीय समाजशास्त्र नामक पत्रिका में छापा गया। इसके अनुसार वैश्वीकरण बहुलवादी है, जो सम्पूर्ण संसार की विभिन्नताओं का समावेश करता है। इसका प्रथम प्रयोग एक समाजशास्त्रीय अवधारणा के रूप में किया गया था। मैल्कम वाल्टरस ने अपनी फस्तक में लिखा है कि वैश्वीकरण के अन्तर्गत राष्ट्रीय अन्तः क्रियाओं का पर्याप्त समावेश होता है। इसमें भूगोल तथा राष्ट्रीय स्थानीय सीमाओं के जो दबाव और बन्धन होते है वे धुमिल हो जाते है यहाँ सब कुछ खुला हुआ है। वैश्वीकरण एक बहुआयामी खुली प्रक्रिया हैं। कुछ विचारक इसे एक आर्थिक अवधारणा मात्र समझते हैं उनके लिए वैश्वीकरण उदारीकरण है निजीकरण है और निवेश हैं। वैश्वीकरण वह बड़ा सामाजिक प्रक्रिया हैं जो संपूर्ण मानव जीवन को अपने अंदर समा लेती है। आज भी अन्तर्राष्ट्रीय जगत में यह धारणा बनी हुई हैं कुछ राष्ट्र प्रभुत्वशाली होते हैं और कुछ सर्वोत्तम प्रभुत्वशाली। ये राष्ट्र भूमण्डलीकरण के माध्यम से अपनी अर्थव्यवस्था को थोपना चाहते है। संयुक्त राष्ट्र अमेरिका इसका अच्छा उदाहरण है। भूमण्डलीकरण सामाजिक आर्थिक परिवर्तन की यह प्रक्रिया समाज के अन्य क्षेत्रों से सम्बन्धित हो सकती है। एक विश्वव्यापी व्यापार विधा के रूप में भूमण्डलीकरण यद्यपि एक नया अधिगम हैं। किन्तु इसके जुड़े द्वितीय विश्व युद्ध के बाद के पाँच दशकों में निहित हैं। 1960 के दशक को वैज्ञानिक नीति नियोजको में वृद्धि काल के रूप में देखा 1970 के दशक को संवहनीय विकास के रूप में व्याख्याति किया और निजीकरण पर विशेष बल देते हुए वैश्वीकरण का उद्घोष किया।

भूमंडलीकरण को आगे बढ़ाने के लिए प्रमुख प्रेरक तत्व हैः–

1. बाजार की खोज
2. बहुराष्ट्रीय विनिवेश और
3. प्रौद्योगिकी इलेक्ट्रॉनिक के नये उपकरण और कम्प्यूटर से जुड़ा विश्व सूचना संसाधन।

भारत ने भी वैश्वीकरण से कई मोर्चा पर उल्लेखनीय प्रगति की हैः–

हमारी पहली प्रगति विदेश नीति के मोर्चे पर हुई है हाल के वर्षों में राजनीतिक तौर पड़ हम अमेरिका के इतने करीब कभी नहीं रहें जितने अभी है, साथ ही अफ्रीका, अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड तक भी हमारी पहुँच मजबूत हुई है। देश–दुनिया में मोदी के नेतृत्व को व्यापक रूप से मान्यता मिली है। दूसरी सफलता आर्थिक मोर्चे पर हुई है :– मामूली मुद्रास्फीती के कारण हमारी अर्थव्यवस्था 7.4 फीसदी की दर से कुलांचे भर रही है। विश्व में सबसे तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था हमारा एक सकारात्मक पक्ष है। विश्व बैंक हर वर्ष 'ईज ऑफ डूइंग बिजनेस' यानी करोबारी माहौल को लेकर दुनिया की तमाम देशों की रैंकिंग जारी करता है। यह सूची एक तरह से निवेदन के माहौल और संभावित विकास के अनुमान का खाका तैयार करती है। प्रोद्योगिक क्रांति की वजह से पैदा नहीं हो रही इस मामले की सतही तौर पर देखना होगा।

स्किल इंडिया कार्यक्रम को अगर अत्याधुनिक बनाना है तो हमें 21वी सदी के अनुकूल शिक्षा और कौशल को बढ़ावा देना होगा। आमतौर पर भूमंडलीयकरण की प्रक्रिया का सम्बन्ध आर्थिक जगत से माना जाता है। लेकिन सामाजिक आर्थिक परिवर्तन की यह प्रक्रिया समाज के अन्य क्षेत्रों से भी संबंधित हो सकती है। भूमंडलीकरण वह प्रक्रिया है जो आधुनिकीरण समाजशास्त्र विषय के शुरूआत के समय से ही सामाजिक परिवर्तन इसके अध्ययन की सबसे महत्वपूर्ण विषय वस्तु रहा है। यह कहना अनुपयुक्त नहीं होगा कि समाज में परिवर्तन की प्रक्रिया को समझने के क्रम में ही समाजशास्त्रियों की उत्पति हुई है। यही कारण है कि सभी प्रारंभिक समाजशास्त्रियों ने समाज में परिवर्तन की उद्विकासीय प्रकृति को व्यक्त करने के लिए लगभग सामान्य प्रकार का परस्पर विरोधाभासी विशेषताओं को प्रस्तुत किया है। दुर्खिम का यान्त्रिक एकता बनाम सावयवी एकता एक टॉनीज का जेमिनशाफ्रट बनाम जेसिशाफ्रट, स्पेन्सर की अविभेदीकृत समानता से परिवर्तन की प्रकृति को स्पष्ट करते हैं। इस सभी विचारों में एक समानता है, और वह यह है कि परिवर्तन की प्रकृति

उद्विकासीय रही है। परम्परा बनाम आधुनिकता की अवधारणा का प्रतिपादन बहुत देर से हुआ। उपरोक्त परस्पर विरोधी संकल्पनाओं के अनुरूप हैं, तथा समाज में परम्परागत विश्व दृष्टि से आधुनिक विश्व दृष्टि में परिवर्तन की निरंतरता को व्यक्त करता है।

भारतवर्ष की कुल आबादी का लगभग दो तिहाई आबादी युवा वर्ग है जो वर्तमान वैश्विक परिवेश से प्रभावित होकर शिक्षा के क्षेत्र में विश्व के लगभग सभी विश्वविद्यालयों में अपनी परचम लहरा रहे हैं। भूमंडलीयकरण एक तरफ चुनौती है वहीं दूसरी तरफ यह जनसंख्या प्रवास का सबसे बड़ा द्योतक भी है। आज भारत के युवा विश्व के लगभग सभी देशों में व्यापार, शिक्षा, नौकरी तथा अन्य रोजगार पर प्रवास करते हैं। यह आजादी भूमंडलीयकरण के कारण ही है। वर्तमान तकनीकि व्यवस्था का विकास युवाओं के परिश्रम तथा भूमंडली स्वतंत्र व्यापार प्रणाली पर आधारित है। इसके साथ ही भूमंडलीयकरण का युवाओं पर पड़ने वाला प्रभाव एक तरफ सकारात्मक होता है वहीं दूसरी तरफ यह नकारात्मक भी है। आज युवा बाह्य संस्कृतियों से परिचित होकर अपनी संस्कृति से विमुख होते जा रहे हैं। सामाजिक सम्बन्धों में कमी आ रही है। सामाजिक आदर्श, सामाजिक मूल्य तथा सामाजिक नियम कमजोर पड़ते जा रहे हैं। सामाजिक संस्थाएँ यथा परिवार, विवाह तथा नातेदारी पर इसका प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है।

निष्कर्ष

दरभंगा वैश्वीकरण से पूर्व जजमानी अर्थव्यवस्था कायम थी परंतु 1990 के बाद यहां स्पष्ट परिवर्तन दिखाई देने लगा है। जगह–जगह स्थापित पटसन तथा गुड़ उद्योग जे गृह लघु एवं वृहत पैमाने पर चल रहा था लगभग इस क्षेत्र से पूर्णतः समाप्त हो चुका है। सभी जिला मुख्यालय के आसपास स्थापित अद्यौगिक क्षेत्र बंद हो गया है। इसके अतिरिक्त अन्य कुटीर उद्योग भी बंद पड़े है। कुछ निजी प्रयास से जो उद्योग चल रहा है वह भी रूग्णता की ओर अग्रसर है। इस वैश्वीकरण के दौड़ मे दरभंगा में स्थापित पूर्व की अर्थ व्यवस्था ध्वस्त हो रही है तथा यहाँ के युवा मुख्यतः सरकारी या गैर सरकारी नौकरी के लिए प्रेरित है। यह एक घातक प्रवृति है।

संदर्भ–सूची

1. सुन्दरम एवं रूद्र दत्ता, भारतीय अर्थव्यवस्था।
2. उमा कपिला, भारतीय अर्थव्यवस्था।
3. रमेश सिंह, भारतीय अर्थव्यवस्था।
4. मिश्रा और पूरी, भारतीय अर्थव्यवस्था।
5. बिहार गजेटीयर।
6. दैनिक प्रभात खबर – 31 मार्च 2020
7. इन्टरनेट